

१. गागर में सागर

-बिहारी

किसी संत कवि के पद/दोहों का आनंदपूर्वक रसास्वादन करते हुए श्रवण कीजिए :-

श्रवणीय

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- संत कवियों के नाम पढ़ें ।
- उनकी पसंद के संत कवि का चुनाव करने के लिए कहें ।
- पसंद के संत कवि के पद/दोहों का सी.डी. से रसास्वादन करते हुए श्रवण करने के लिए कहें ।
- कोई पद/दोहा सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

परिचय

जन्म : सन १५९५ के लगभग ग्वालियर में हुआ । **मृत्यु :** १६६४ में हुई । बिहारी ने नीति और ज्ञान के दोहों के साथ - साथ प्रकृति चित्रण भी बहुत ही सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : बिहारी की एकमात्र रचना सतसई है । इसमें ७१९ दोहे संकलित हैं। सभी दोहे सुंदर और सराहनीय हैं ।

पद्य संबंधी

दोहा : इसका प्रथम और तृतीय चरण १३-१३ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण ११-११ मात्राओं का होता है ।

प्रस्तुत दोहों में कविवर बिहारी ने व्यावहारिक जगत की कतिपय नीतियों से अवगत कराया है ।

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहीं कोइ ।
ज्यों-ज्यों बुड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ ॥

घरु-घरु डोलत दीन हवै, जनु-जनु जाचतु जाइ ।
दियै लोभ-चसमा चखनु, लघु पुनि बड़ों लखाइ ॥

कनक-कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ ।
उहिं खाए बौराइ जगु, इहिं पाए बौराइ ॥

गुनी-गुनी सबके कहैं, निगुनी गुनी न होतु ।
सुन्यौ कहूँ तरु अर्क तै, अर्क समान उदोतु

नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोइ ।
जै तो नीचौ हवै चलै, ते तौ ऊँचौ होइ ॥

अति अगाधु अति औथरौ, नदी कूप सरु बाइ ।
सो ताकौ सागरु जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ ॥

बुरौ बुराई जो तजै, तौ चितु खरौ सकातु ।
ज्यों निकलंक मयंकु लखि, गनै लोग उतपातु ॥

समै-समै सुंदर सबै, रूप-कुरूप न कोइ ।
मन की रुचि जेती जितै, तित तेती रुचि होइ ॥



शब्द संसार

बौराइ (स्त्री.सं.) = पागल होना, बौराना
निगुनी (वि.) = जिसमें गुण नहीं
अर्क (पुं.सं.) = रस, सूर्य
उदोतु (पुं.सं.) = प्रकाश
अरु (अव्य.) = और

अगाधु (वि.) = अगाध
सरु (पुं.सं.) = सरोवर
निकलंक (वि.) = निष्कलंक, दोषरहित
मयंकु (पुं.सं.) = चंद्रमा
उतपातु (पुं.सं.) = आफत, मुसीबत



अन्य नीतिपरक दोहों का अपने पूर्वज्ञान तथा अनुभव के साथ मूल्यांकन करें एवं उनसे सहसंबंध स्थापित करते हुए वाचन कीजिए।



अपने अनुभववाले किसी विशेष प्रसंग को प्रभावी एवं क्रमबद्ध रूप में लिखिए।



‘निंदक नियरे राखिए’ इस पंक्ति के बारे में अपने विचार लिखिए।



ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हिंदी साहित्यकारों की जानकारी पुस्तकालय, अंतरजाल आदि के द्वारा प्राप्त कर चर्चा करें तथा उनकी हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।



https://youtu.be/Y_yRsbf9I

१) ‘नर की अरु नल नीर की’ इस दोहे द्वारा प्राप्त संदेश स्पष्ट कीजिए।

२) शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

(क) घरु = (ख) उज्जलु =



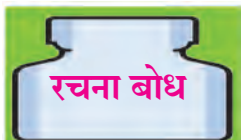
दोहे प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता में अर्थ सहित दोहे प्रस्तुत कीजिए।



निम्नलिखित मुहावरों, कहावतों में गलत शब्दों के स्थान पर सही शब्द लिखकर उन्हें पुनः लिखिए :-

मुहावरें - कहावतें

- | | |
|--|---------|
| १. टोपी पहनना | १. |
| २. गीत न जाने आँगन टेढ़ा | २. |
| ३. अदरक क्या जाने बंदर का स्वाद। | ३. |
| ४. कमर का हार | ४. |
| ५. नाक की किरकिरी होना | ५. |
| ६. गेहूँ गीला होना | ६. |
| ७. अब पछताए होत क्या जब बंदर चुग गए खेत। | ७. |
| ८. दिमाग खोलना। | ८. |



.....

